नागरीप्रचारः—

प्रकाशक, गोपाललाल खत्री.

लखनऊ

प्रथमबार १९०८ मूल्य ।)

"ऐंग्लोओरियण्टल प्रेस" लखनऊ.

समर्पण ।

प्यारे भाई भारतवासियो !

यह छोटीसी पुस्तक आपही लोगों के काम की है और वास्तव में आपही लोगों के लिये लिखी भी गई है अतएव आपही को इसका समर्पण किया जाता है । एकबार इसे आद्योपान्त पढ़कर यदि आप इसपर विचार करेंगे तो इस देश का बहुत कुछ भला होगा । यही नहीं वरन् आप अपनी भी बहुत कुछ भलाई करसकेंगे । आशा है कि मेरी विनय निष्फल न जायगी ।

आपका—

गोपाललाल

गोपाललाल खत्री

अध्यक्ष-नागरीप्रचारक लखनऊ.

सम्पादकगण।

—:o:—

श्रीमान्	सम्पादक	हिन्दुस्थान	कालाकांकर
”	”	मोहिनी	कन्नौज
”	”	भारतमित्र	कलकत्ता
”	”	हिन्दीबंगवासी	कलकत्ता
”	”	श्रीवेंकटेश्वरसमाचार	बम्बई
”	”	आनन्द	लखनऊ
”	”	हितवार्त्ता	कलकत्ता
”	”	हिन्दीकेसरी	नागपुर
”	”	अभ्युदय	अलाहाबाद
”	”	मारवाड़ीबन्धु	कलकत्ता
”	”	भारतजीवन	बनारस
”	”	भारतवासी	अलाहाबाद
”	”	आर्य्यमित्र	आगरा
”	”	जैनगज़ट	देवबंद
”	”	बिहारबन्धु	बाँकीपुर
”	”	जैनमित्र	बम्बई
”	”	मारवाड़गज़ट	जोधपुर
”	”	सुंदरश्रृंगार समाचार	मथुरा
”	”	ज्ञानसागरसमाचार	बम्बई
”	”	राजस्थानसमाचार	अजमेर
”	”	राजपूत	आगरा
”	”	क्षत्रियपत्रिका	लाहौर
”	”	नारद	छपरा

,,	,,	हितचिन्तक	छपरा
,,	,,	कलाकुशल	दारानगर (प्रयाग)
,,	,,	देवनागर	कलकत्ता
,,	,,	सरस्वती	अलाहाबाद
,,	,,	कमला	कलकत्ता
,,	,,	नृसिंह	कलकत्ता
,,	,,	हिंदीप्रदीप	अलाहाबाद
,,	,,	लक्ष्मी	गया
,,	,,	श्रीनिगमागमचंद्रिका	बनारस
,,	,,	स्वदेशबान्धव	आगरा
,,	,,	काव्यसुधानिधि	बनारस
,,	,,	काव्यकलानिधि	कोंढ़ मिर्ज़ापुर
,,	,,	रसिकरहस्य	जौनपुर
,,	,,	कान्यकुब्ज	फ़र्रुख़ाबाद
,,	,,	भक्ति	कलकत्ता
,,	,,	आनन्दकादम्बिनी	मिर्ज़ापुर
,,	,,	मारवाड़ी	कलकत्ता
,,	,,	भारती	बनारस
,,	,,	बालप्रभाकर	बनारस
,,	,,	भारतेन्दु	बनारस
,,	,,	हिन्दी हिन्दू पत्र	बम्बई
,,	,,	व्यापारी और कारीगर	बनारस

नागरीप्रेमीगण ।

श्रीमान् राजा कमलानन्दसिंहजी सुरनिया नरेश	श्रीनगर
श्रीयुत जस्टिस शारदाचरण जी मित्र	कलकत्ता

श्रीमान् गयाप्रसादजी त्रिपाठी सिवारपुर
,, पंडित मदनमोहनजी मालवीय अलाहाबाद
,, ,, लज्जारामजी शर्म्मा बूँदी
,, किशोरीलालजी गोस्वामी बनारस
,, जैन वैद्यजी जयपुर
,, बाबू देवकीनन्दन खत्री बनारस
,, श्रीधरपाठक अलाहाबाद
,, महेन्दुलाल गर्ग लखनऊ
,, गोस्वामी राधाचरणजी वृन्दावन
,, पं० नर्म्मदाप्रसाद मिश्र रायपुर
,, राय देवीप्रसाद बी. ए. बी. एल. (पूर्ण) कानपुर
,, पं० अक्षयबट मिश्र विशुद्धानन्द विद्यालय कलकत्ता
,, पं० देवीप्रसाद शुक्ल क्रिश्चियनकालेज कानपूर
,, पं० सूर्य्यनाथ मिश्र पटना
,, बाबू रामजीदास वैश्य ग्वालियर

प्रार्थना ।

उल्लिखित माननीय सम्पादक गण !

और

प्रिय नागरी प्रेमीगण !

हम नागरीप्रचारक के किसी गत अङ्क में कवियों से "नागरीप्रचार देश उन्नति का द्वार है"– इस समस्या पर २५।२५ भावपूर्ण कविता करके भेजने का अनुरोध करते हुए पत्रसम्पादक महो-

वर्षों की "औवल नंबर कौन है ?" इसपर अधिक सम्मति के अनुसार उन (औवल नंबर) कवि महाशय को एक सावरेन पुरस्कार देने की बात प्रकाशित करचुके हैं। आज निम्नलिखित कवि महाशयों की पूर्त्तियां पुस्तकाकार छपाकर आप लोगों की सेवा में उपस्थित होते हैं। आशा है कि आपलोग अवश्यही ३० जून १६०८ के भीतर ही अपनी २ माननीय सम्मति पत्र द्वारा सूचित करेंगे कि इन कवियों में किसको पुरस्कार मिलना चाहिये ?

---

*पूर्त्तिकारलोग।

१—रूपनारायण पाण्डेय (कमलाकर)
२—पं० राघवेन्द्र त्रिपाठी (ब्रजेश)
३—पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय.
४—श्री रघुनन्दनसिंह जी वर्म्मा.
५—श्री प्रयागनारायणजी (संगम)
६—बाबू श्रीगोबिन्ददास जी लखनऊ.

विनीत गोपाललाल खत्री.
अध्यक्ष—नागरीप्रचारक
(मासिकपत्र)
लखनऊ.

---

*जिनकी पूर्तियां २५से कमहैं उनका नाम यहां नहीं दिया गया क्योंकि पूरी २५ भेजने वालोंही को इनाम देने की बात है।

श्रीगणेशाय नमः ।

"नागरी-प्रचार देशउन्नति को द्वार है"

समस्या की पूर्त्तियाँ ।

(पं० रूपनारायण पाण्डेय [कवि कमलाकर]
रानीकटरा लखनऊ.)

घनाक्षरी ।

सोहत सुजाननकी सुखद सजीवमूरि, दोषन ते दूरि करै भूरि उपकार है । लागत ललित लेख सुधारस रूरे, पूरे देखत सुनत होत सच्चर सुधार है ॥ ऐसी गुनआगरी हमारी मातृभाषा यह नागरी निहारि पाय आनँद अपार है । देसी जन अब सब करत विचार अस नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ॥१॥

एहो मतिमान धनी सुजन सुजान भाई चूकौ मति यासों यदि हृदय उदार है । विनय विनीत की विचारिये बिसारि बैर चाहौ जो करन कछु भारतसुधार है ॥ नागरी-प्रचार में लगाओ तन, मन, धन, जीवन-सबै है छनभंगुर कहा रहै ? । नागरी-प्रचारक-प्रचार चारओर करौ नागरीप्रचार देशउन्नतिको द्वार है २

पण्डित प्रतापमिश्र परम प्रवीन प्रेमी कियो नागरी को बहु भाँति उपकार है । भारतेन्दु श्रीयुत हरीचँद महाउदार कियो धन जीवन दै नागरी-सुधार है ॥ माधवप्रसाद मिश्र बाबू राधा कृष्ण आदि होगये अमर करि नागरी उबार है । नागरी-प्रचार करतव्य है सबै को जासों, नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ३ ॥

सुनिये सुलेखक सुजन सब सेवक की समय न चूकिये शरीर ये असार है। लिखिये ललित लेख लेखनी पकरि कर रचिये रुचिर छन्द रुचि अनुसार है ॥ जो कछु जहाँ से जैसे मिलै उपयोगी वस्तु जासों जिय जानौ जाति, देश उपकार है। सोई करौ हिन्दी और राखौ यों विचार हिये-" नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥ ४ ॥

देखो देवनागर दिवाकर उदित भयो पूरब की ओर प्रभा प्रकट अपार है। कमला नृसिंह हिन्दी केसरी अनूप रूप हिंदी उपकार को उठायो शिर भार है ॥ नागरी प्रदीप लक्ष्मी सुंदर सरस्वती के दिन २ दूने उतसाह को पसार है। करिये सहाय आय इनकी समर्थ लोग—नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ५

नव अभ्युदय को भयो है अभ्युदय और आनँद अनूप देत आनँद अपार है। मारवाड़ीवन्धुके सुधारक ललित लेख भारत के मित्र को विचार अविकार है ॥ ऐसे पत्र पढ़िवे में विमुख मनुष्यन को मूरख न मानि कीन्यो अस निरधार है। नागरी-निरादर करत जे न जानैं वह 'नागरीप्रचार देश उ-न्नति को द्वार है' ॥ ६ ॥

पढ़ि पर भाषा जनु आँखिन में तींगुर है, सूझै न निकट दूरि सूझत सदा रहै। कुमति दवारि चिनगारि डारि जारि दीन्यो आपस की रारि चहुँओर की बयार है ॥ चारु पद मद मातृपद चारु मातृभूमि चारु मातृभाषा यह नागरी हमार है। याते हम कहत पुकार बार २ यह नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ७ ॥

द्वार है सुधार को, पसार है प्रभावको, विचार है स्वभाव

को अभाव को सँहारहै। हारहै हियाको, व्यवहार है सदाको, होनहार है अपार एकता को अवतार है ॥ तार है सुमति को सुमत है उदार, यार ! गुन को अगार पूरो पर उपकार है। कार है स्वदेशी यारों कहत पुकार हम—नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥८॥

आवत सहजही समझ में सबद सब, भाव भली भांति भासै बुद्धि अनुसार है। बरन सुहावने सरल सुनिबे में लगैं, लेखपरिपाटीहू निपट सुकुमार है ॥ नियम उदार, सब देश के निवासी याते करि सकैं आपस में प्रकट "विचार" है। हेरि यह बार बार होत है विचार अस नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥९॥

बालन ते बोलिये मधुर शब्द नागरी के, नागरी में कीजै नित पत्र-व्यवहार है। पत्र नागरी के नीके पढ़िये लगाय मन, करिये कराइये सुनागरी उचार है ॥ नागरी औ नागर ते नेह करि नागर है देशदशा देखि सिखौ जाति उपकार है। "बिन ज्ञान उन्नति न होत," मानौ सीख सांची,—नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१०॥

नारिन पढ़ाय होहु ज्ञान ते उज्ञन निज दुहिता पढ़ाय करौ जाति उपकार है। होयँगी कुरीति दूरि व्याधिसी रहीं जो घेरि, ज्ञान-सुधा पान किये मिटत विकार है ॥ सूझैगी सुराह चाह होइ है स्वदेशिन की, वाह वाह है है जौन जीवन को सार है। मानिये हमारी, हम हितकी कहत, यार ! नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥११॥

---

१ देवनागर पत्र। २ चतुर।

आर्य्य-नगरीन की निशानी जगजानी मानी, आर्य्यजन जीवन प्रमानी अविकार है। अमृतकी सानी बानी कविन बखानी गुनखानि 'कमलाकर' सुकोमल अपार है॥ लाज नहिं आवै तुम्हैं? सोई मातृभाषा आज दीनता दिखाइ चाहै आपन उबार है। पै तुम न समझौ अजौंहूँ मतिमन्द हाय!-'नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥१२॥

चाहत स्वराज आज जोरिकै समाज सब सभा औ सोसाइटी की बड़ी भरमार है। कालिमातें कलुषित कालमकै कालम कै करत सुधार और हित की पुकार है॥ लाखन के बीच स्पीच उन्नति के हेत देत; पै न इन बातन में पूरो उपकार है। नागरीप्रचार क्यों न करत?—विचारि अस, 'नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥१३॥

उन्नति-शिखर पर जौन जाति देखी जात, रीझ निज भाषा पर उनमें अपार है। त्यागत न अनुराग निज २ भाषा पर पच्छी, पशु—जिन्हैं कहौ निपट गँवार है॥ उनहूते अधम कहैहौ कहा? मानव है! यासों यदि आपनी बड़ाई को विचार है। तौ तुम तुरत करौ नागरी-उबार; जानि,—'नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥१४॥

मान अपमान मानि सबको समान सिखो सांची हमदर्दी यदि हृदय उदार है। तजिकै पुकार अधिकार पाइबे की अब सब मिलि कीजै एकता को व्यवहार है॥ दारिद दुसह दुख दूरि दुरिजैहै जुरिजैहै मोद मंगल बिनोद तत्वतार है। पै तुम प्रथम करौ नागरी—प्रचार, जानि;—"नागरीप्रचार देश उन्नाति को द्वार है" ॥१५॥

श्रीनगर शोभित पुरनिया—नरेश * धन्य, करत अपार नागरी को उपकार है। अगनित लेखकन दीन्हे हैं इनाम और कीन्हे छपवाय ग्रन्थ नागरीउबार है॥ सुभ सबही को ऐसी सुमति सदैव दीजै, विनय हमारी यही एक करतार! है। जानहि समस्त देश भारत प्रशस्त अस—'नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥१६॥

सदय हृदय सु महोदय गयाप्रसाद † परम उदार गुनगौरव अगारहैं। नागरी रसिक अति नागर निहारे हम प्रेमें परिपूरन प्रवीन व्यवहार है॥ सादर सहाय सदा हिन्दी की करत रहैं शक्ति, अधिकार और बित्त अनुसार है। राखत विचार त्यों सुदृढ़ सब भांति यही—"नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥१७॥

श्रीयुत सुविज्ञवर जष्टिस महानुभाव शारदाचरण मित्र परम उदार हैं। देश उपकार एक लिपि के पसार हेत दीन्हो देवनागर को पूरो अधिकार है॥ भारत निवासी सब शिक्षित सहानुभूति आपनी दिखावैं यासों ठीक ये विचार है। और कौन भांति समझावैं बार बार यार! "नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥१८॥

सिद्ध करिलैहौ काम होइ हौ प्रसिद्ध, जो न सोइहौ विचारि—'जगजीवन असार है'। सुनि मुनि वेद सीख जतन करौगे पुनि आपस मैं जासों भेदभाव ना बना रहै॥ करुनानिधान मित्र! करुना करैंगे दुखदारिद दरैंगे देइ पूरो अधिकार

---

* श्रीमान् राजा कमलानन्दसिंह जी। † श्रीयुक्त गयाप्रसादजी त्रिपाठी ताल्लुक़दार सिहारपुर जि० मांडला (सी. पी.)

है। सुमति हिये में उपजैहैं जब जानिहौ कि—'नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥१६॥

जीवन को सार सुभ नागरीप्रचार एक, यासों न अधिक और देश--उपकार है । मातृभाषा--सेवा मातृभूमि की परम पूजा दूजा जप तप प्रेम नेम ना हमार है ॥ आओ यश लीजै मिलि कीजै 'कमलाकरजू' यामें यार हमही को पूरो अधिकार है । केवल न कहि किन्तु करिकै दिखाय देहु 'नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है' ॥२०॥

भाव-भरी, सुन्दर, सोहावनी, सरस, सूधी,—ऐसी और भाषा न दिखाईदेत यार ! है । कौनहू विषय की न न्यूनता निहारियत, व्यवहार जोग परिपूरन भँडार है ॥ चाहै ज्याहि भाषाको कठिन ते कठिन शब्द लिखि पढ़ि लीजै शुद्ध,—पूरो अधिकार है । निपट गँवार तौन, समझि सकै न जौन— "नागरी-प्रचार देशउन्नति को द्वार है" ॥२१॥

विज्ञ गुहफट्ट भट्ट बालकृष्ण माननीय, जिनको विचार अति उन्नत, उदार है । धन्य २ जननी जनक उनके हैं, जिन जायो सुत ऐसो गुन, गौरव अगार है ॥ प्रकट "प्रदीप" को प्रकाशकरि नागरी की साहस-सहित सेवा करत सदा रहै । सब को सुझावत बुझाय बार २ वीर—"नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥२२॥

यार ! करतव्य है तुम्हार तुम हिंदी की सहाय करौ, हाय चित्त, वित्त अनुसार है । ठौर २ खोलौ पुस्तकालय स्व-तंत्र, जहाँ सबही को सदा आवागमन बनारहै ॥ नये उपयोगी ग्रंथ हिंदीके छपाय—दाम सुलभ लगाय, करौ उनको प्रचार है ।

हेरै न सुफल कछु केवल कहेते यह—"नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥२३॥

आदि महँ बाला-बालकन को पढ़ाय हिंदी, हिंदूवानि पूरे करौ हिंद उपकार है। हिंदी-पत्र-पुस्तक मँगाय, कै सहाय भाय! धनको लगाय कीजै नागरी-पसार है॥ अपढ़ गँवारन को शिक्षित बनाय मित्र! नागरी पै भक्ति करि शक्ति-अनुसार है। औरन बुझाय, देहु समझाय बार २—"नागरी प्रचार देशउन्नति को द्वार है" ॥२४॥

ऐसहु घमंडी हैं अनेक अबिवेक भरे नेक न करत नम्रता को व्यवहार है। करि उतसाह-भंग औरन को, आप बीरा नागरीप्रचार को उठावत गँवार हैं॥ छोटे २ नागरी के पत्रन पै, ताने मनमाने करि, चाहैं कियो नागरी-सुधार है। हाय२ उनको न इतनो विचार है कि—"नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥२५॥

पावत न स्वाद कोऊ कोऊ यों कहत—"हमें हिन्दी पढ़ने का अवकाशही कहाँ रहै?"। हेरे बहुतेरे घेरे रहत नमूना हेत, सेंत के पढ़ैयन की गिनती अपार है॥ वी. पी. मँगवाय कोऊ फेरि फेरि फेरि देत, उनकी कुमति पै करोर फिटकार है। सोचत न हाय! चितलाय "कमलाकर" वे—"नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है" ॥२६॥

——:*:*:*:——

[पं० राघवेन्द्रशर्म्मा त्रिपाठी (ब्रजेश कवि) स्थान गोनी पोस्ट अतरौली ज़िला हर्दोई]

घनाक्षरी ।

द्वारहै दयाको दिव्य दृगसों दिखाई देत दान दमकेगो दिगव्यापी दरबार है । बार है विभवको, ब्रजेशजू विलोको वेगि वैसही विशाल विज्ञवेदन विचारहै ॥ चार चारु चित्रित विचित्रित चरित्रनको चन्द्र चांदनी सों चहूं चटक पसारहै । सार को शिरोमणि है साधक है साधौ सबै, नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १ ॥

द्वार है सुखद देव लोक को सुपुण्य पंथ सुन्दर सनेही सब भांति होनहार है । हार है प्रसन्नताई हेत अम्ब भारती को भारत छुधारत को एक उद्गार है ॥ गार है भलेही एकता को भव्यभावयुत सुकवि ब्रजेशजू, को एकमात्र प्यारहै । प्यार है सबैको यासों कीजिये सहाय वेगि नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २ ॥

द्वारहै धरमको लखत धीर धारो नेक मूल मन्त्र बन्देमातरम हूँसो सार है । सारहै स्वदेशी बस्तु, कौशल कला को करि कृषिको करोजू वृद्धि कोरिन प्रकार है ॥ कार है अनेक विधि आलस न बूड़े कत उद्यमसों दुख को तिरोगे पारवार है । वार है विदेशिन पै कीजिये, ब्रजेश वेगि, नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ३ ॥

भारतके भावुक भलाई के चहन वारे भाइयो सुनो तो यह प्रकट प्रचार है । जो पै बुद्धि बाहुबल बीरता बड़ाई बनी नेकहू रह्यो जो नेक उरमैं बिचार है ॥ तौ क्यों दीन

देश की दशाको देखि भूले फिरौ करत नहीं हौ जो सरल उपचार है। आओ मिलि नागरीको प्रथम बढ़ावैं मीत नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ४ ॥

आखर ललित मञ्जु मधुर सुधासी तिमि पावन प्रवाह जिमि सुरसरि धार है। सुखद ब्रजेश, सब भांति सों विलोचन को मन मोहिबे को मन्त्र अति सुख सार है ॥ मूरिसी सजीवन की भारत छुधारत को एकता को एकही अनूठो उपचार है। नेहवारे नागर को परम सनेही करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ५ ॥

पावन है प्रियहै प्रकट परमारथ है प्रेम है प्रधान है प्रचारक प्रचार है। शुचि है स्वभाव है सरस है सुखद सत्य सुन्दर सनातन सदा सों शुभसार है ॥ बन्धु है ब्रजेशजू विवेक को बिचारो वेश वैभव विनोद वैसो विगत विकार है ॥ नेम है नगीची है निकट है निहारो नेक नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ६ ॥

हदहिन्दुवाने को हमारो है हरष हेतु हितू सों हेरेई हिय हेरो होनहार है। धीमति की धुरि है धरा में धन्य धारो धीर धरम ध्वजा को ध्रुव धारक, सुधार है ॥ कीरति कलापहै, कवित्व कमनीयताई कोविदकवीशन को कलित कछारहै। कौशल कला को कुञ्ज सुकवि, ब्रजेश मञ्जु नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ७ ॥

साधक है सिद्धि को सदन सारदा को सुठि सरल सहोदर सुजान श्रुति सार है। गाँहक गुणिजन को गुरु को गुरू है गहौ गौरव गरूरता गहेई गुनागार है ॥ भाजन है भारत

के भाग्य को भलाई भरो भव्यभाव भूषित भलेई सुविभार है। छिम छरकायल ब्रजेश, छवि है है करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ८ ॥

प्रेमपरिपूरण पुरातन को लीन्हे रहो चीन्हे रहो चेत कारि जगत असार है ॥ ध्यान परमातम के पदगुण दीन्हे रहो भीने रहो कौशलकलामें सुखसार है ॥ देश को ब्रजेश, अनु राग रस पीने रहो हीने रहो हियसों न उद्यम उदार है। नागरी प्रचार मीत सब विधि कीने रहो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ९ ॥

करि करतूति कोटि विधिसों करो पै करो यामें न धरो जू धीर सुदिन तुम्हारहै। काम करतव्यता को एकही अनूठो यह पास में, ब्रजेश, वैसो भाग को भँडार है ॥ पुण्य परमा-रथ है स्वारथ है सब विधि सुखद यथारथ है धरम संचार है। नागरी प्रचार ऐसो क्यों नहीं प्रचारो मीत नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १० ॥

देश है हमारो सुखवेश है ब्रजेश, यह कारज हमारोई हमारो होनहार है। धर्महै हमारो शुचि कर्म है हमारो तिमि मोद है हमारो भूरिभाव को संचार है ॥ बल है हमारो कर तव्य है हमारो एक नेम है हमारो प्रेम पुञ्ज को पसार है। साधक हमारो है हमारो है सदा को नेह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ११ ॥

आखर अनूप रूप भ्रमभाव भूलिहू न भासत हिये में नहीं नेकहू विकार है। विदित पदारथ यथारथ प्रकाशै कहे प्रकट प्रयोजन प्रसिद्ध सुखसार है ॥ भनत, ब्रजेश, गुण रस, रीति व्याङ्गि, धुनि लच्छणा, अलंकृत, को एक उदगारहै। ऐसी

धन्य धाम नागरी को क्यों प्रचारो नहीं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१२॥

धारे रहो धीरज धरा में धन्य भाग आज पारे रहो प्रेम जो स्वदेशहीको सार है। सुकवि ब्रजेश, निज कामसों न न्यारे रहो प्यारे रहो सबके सदाही देह ना रहै॥ कोटि भांतिहूँसों करतव्य उपचारे रहो हारे रहो हिम्मति न, कैसो उपकार है। नागरी उजागरी को हेत के संवारे रहो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१३॥

नागरी में वेदन को भेद बरण्यो है सब नागरी में शास्त्रन को सुमति सँचार है। नागरी में स्मृति अंग, नीति, है बखानी लखौ, नागरी में पूरण पुराणन प्रचार है॥ नागरी में कविता कलाप है कवीन्द्रन को, नागरी सों हेरो धर्म कर्म को सुधार है। नागरी, ब्रजेशजू, हमारी मातृभाषा, वहै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१४॥

जैसे धीर धरिकै अनेकता बिसारे कहो एकता पै आज देश उन्नति को भार है। जैसे दत्तचित्तसों कहतहो बिनाहीं खेद कौशल कलाको हठि कीजिये प्रचारहै॥ जैसे आप कहत स्वदेशही के प्रेमीहम, ग्रहण स्वदेशी ब्रत धरम हमार है। वैसे क्यों न मेलकै कहोजू सब एक बार नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१५॥

केवल बनाये बात काम न चलैगो नेक टेक हिय धरिकै कहो जो आजकार है। सुन्दर स्वदेशी ब्रत शुचिसों सराहो तिमि ग्रहण स्वदेशी वस्तु निज उपकार है॥ एकता करो पै करो सुकबि ब्रजेश, भनै एक सम दिवस न काहूको बनारहै।

कौशल कला को सीखि नागरी प्रचारो सबै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१६॥

नागरी प्रचार है प्रचार धर्म कर्मन को नागरी प्रचार पुण्य पावन पसार है। नागरी प्रचार है उपाय एकता को एक नागरी प्रचार गूढ़तत्व को विचार है॥ नागरी प्रचार भव्यभावसों भरो ब्रजेश, नागरी प्रचार त्यों स्वतंत्रता सुधार है। नागरी प्रचार है हमारो हम नागरी के नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१७॥

नागरी प्रचार है स्वतंत्र करतव्य एक नागरी प्रचार परमारथ सुधार है। नागरी प्रचार शुचि स्वारथ सदा को सत्य नागरी प्रचार फल चारहूँ को सार है॥ नागरीप्रचारक गोपाललालजू को आज नागरी प्रचारही उचित उपकार है। नागरी प्रचार है हमारोई, ब्रजेश, वहै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१८॥

जीवन सुफल उनही को हौं बखानौं आज जिनके हिये मैं कछु सुमति संचार है। स्वारथ परायणता तजि निज देशही को सेवत सदा हैं यह परम बिचार है॥ द्वेष अरु आलस नि-वारिकै, ब्रजेश, करैं जाति से सहानुभूति, उद्यम उदार है। आपस की फूट छोड़ि नागरी प्रचारैं, जौन नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१९॥

खोये देत जनम अकारथ तऊ पै जऊ जानत जगत यह सकल असार है। आलस में परिकै, ब्रजेश, न ब्रजेशै भज्यो नेकहूँ तज्यो ना पाप पुण्य व्यभिचार है॥ धार्यो नहीं धरम सुधार्यो नहीं देश निज, पार्यो नहीं चित्त माहिं परम बिचार

है। नागरी प्रचारयो नहीं कीन्ह्यो काज कौन, जौन नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२०॥

धीर धरि धारयो नहीं धरम धनी है रह्यो पारयो नहीं प्रेम पुण्य परम प्रचार है। सारयो नहीं सकल समाज सुख कीजों मीत देश को सुधारयो नहीं किमि सुविचार है॥ दीननि दयाके दृग नेकहू निहारयो नहीं वारयो नहीं तनमनधन उपकार है। नागरी प्रचारयो नहीं सुकावि ब्रजेश, जौन नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२१॥

वादिन फिरैगो फेरि हेरि निज देखो हीय मीतसो बनैगो जो अमीत अनुहार है। मान मरयाद या स्वदेश अभिमानिन की जैहै रहि आपही करैंगे सब प्यार है॥ भनत ब्रजेश, नहिं बनत लगैगी बार अहै विधि दाहिने सदा जो सुख सार है। नागरी प्रचार है है भारत धरा मैं, जौन नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२२॥

भेजि प्रिय पुत्रन को देश मैं विदेशिन के शिल्पकला, कौशल, सिखाओ सुखसार है। दोष है न यामें यह प्रथम प्रथा है मीत वेद औ पुराणन के मत अनुसार है॥ मानिये न बात तो विदेश के पयान हेत कीन्ह्यो जो विचार * लखो देश उपकार है। मातृभाषा सीखहु, सिखावो, सबको 'ब्रजेश' नागरीप्रचार देश उन्नाति को द्वार है ॥२३॥

पूरुब समै में भई पण्डिता अनेक वाम जिनको चरित्र आजहूँ लौं सुखसार है॥ विद्याधरी, कुन्ती, दमयन्ती, काशि कृश्नी, अरु लीलावती, आदिक गनाये नहिं पार है। वैसही

---

* विदेशयात्रा विचार, नामक पुस्तक, श्रीकृष्ण चैतन्य पुस्तकालय वृन्दावन से।) मूल्य में मिलती है देखो। (ब्रजेश)

पढावो अबलान को परिश्रम कै याहू में हमारी जान परमसुधार है। है है बृद्धि ज्ञान की 'अजेशजू' प्रचारो सबै नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२४॥

बोये देत विषम विसासी या विषै को बीज धोये देत मूढ़ जो सदा को रंग प्यार है। नोये देत कुमति अजान काम दासी जानि, रोये देत आलसी है करत न कार है ॥ भनत 'अजेश' कहा धरम बिगोये देत, आनँद निचोये देत कत मतवार है। नागरी प्रचारै नहीं बादि सब खोये देत नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२५॥

श्रीयुत गोपाललाल नागरीप्रचारक को आशिष अनेकभांति सादर हमार है। धन्यवाद सहित कहांलौं हौं प्रशंसौं तोहिं कारज तिहारो यह परम उदारहै ॥ रावरे को सत्य प्रण पूरण करैगो ईश सुकवि 'अजेश, जो निबाहनोई हार है। धीरजको धारि मीत नागरी प्रचारे रहो, नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२६॥

पाण्डेय लोचनप्रसाद बालपुर.

(खड़ी बोली में)

पढ़ी अँगरेजी और फारसी भी सीखी खूब ग्रीक फ्रेन्च भाषा में जमाया अधिकार है। ललित कलित करैं कविता अनूठी अति रचे ग्रन्थ लाखों हुए नामी ग्रन्थकार हैं॥ पर ढोल भीतर के पोल के समान वे जो घरमें न कर सकें शिक्षा का प्रचार है। नारी सुत बात उनकी न बूझैं अतएव नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है॥ १॥

नारी सुता सुत को न जबतक बतावें लोग भाव निज मनके न विविध प्रकार है। महामूढ़ तब तक रहेंगे वे अवश्य औ न उनके बिना हा! होवै देश का सुधार है॥ मातृ-भाषा ज्ञान बिना लोग कैसे कर सकें घरमें सिखा पढ़ा के विद्याका प्रचार है। मातृ-भाषा पढ़ो तन मन देके, अतएव नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है॥ २॥

धर्म्म के प्रचार बिन देशोद्धार होवै नहीं विद्या बिन धर्म का सके न हो सुधार है। विद्या मिले कैसे मातृ-भाषा ज्ञान बिना न स्त्री शिक्षा बिना होता मातृ भाषा का प्रचार है॥ शिक्षित न होते तिय शिक्षा बिना शिशुगण जोकि देश उन्नति के प्रबल अधार हैं। लोचनप्रसाद पढ़ो नागरी को अतएव नागरीप्रचार देश उन्नति का द्वार है॥ ३॥

एक लिपि देशभरमें न होगी जब तक तब तक न नागरी का हो सके प्रचार है। नागरी प्रचार होगा देश भर में न जब कैसे होगा एकता का उचित प्रसार है॥ लाखों यत्न करते मरो न एकता के बिना मिल सकें सुखद स्वराज्य

अधिकार है । हिन्दी कीही उन्नति है मूलमन्त्र अतएव नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ ४ ॥

भाषा है विशुद्ध कहीं दोष का है नाम नहीं भावपूर्ण सरस न एक भी विकार है । अक्षर औ लिपि की तो व्यर्थही प्रशंसा सब सरल सहज मानो मोतियों का हार है ॥ लिखी जावै बात जो न पढ़ी जावै अन्य भांति ताकि बाल वृद्ध सब इसे करैं प्यार है । तो भी इसे जाते सीख जल्द सब, अतएव नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥५॥

तोते के समान बिन बूझे अर्थ भाव को जो पढ़ते विदेशी भाषा शिशु सुकुमार हैं । क्षीण बल वीर्य्य होवे रोगी रहते हैं ताकि कर भी सकैं न कुछ रोजी रोजगार हैं ॥ भ्रात भगनी के पास प्रकट न करसकें निज मनके वे कभी उन्नत विचारहैं । कहो ऐसी विद्या से हा ! लाभ क्या है, अतएव नागरीप्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥६॥

ग्राम २ पाठशाला हिन्दी की न खोल जब, शिशु सुकुमारों को सिखावै नीति सार हैं । सज्जन स्वभाषा प्रेमी तब तक न होवैं वे औ फैशन के वश में हो करैं दुराचार हैं ॥ कला कल कौशल स्वतन्त्र व्यवसाय तज हा ! हा ! चाकरी के हेतु फिरैं द्वार द्वार हैं । किनके भरोसे फिर देशोद्धार होगा हाय ! नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥७॥

नागरी प्रचार घर घर में जो होवै तभी सच्चरित्र होवैं सभी तज दुराचार हैं । ऐक्य, स्वावलम्बन औ प्रेम के गुरुत्व बूझ फूट डाकिनी को करैं मार छार छार है ॥ धर्म्म कर्म्म पालनमें तत्पर रहेंगे वे औ करैं नीति सत्य उपदेश द्वार २ है ।

भारत की दुख औ दरिद्रता कटैगी फिर नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥८॥

शब्द और भाव सुन्दराई में अनूप अति कोमल सरल वर्ण विगत विकार है। रचना प्रणाली की तो व्यर्थही प्रशंसा सत्र नौ–रसवती है अलङ्कार का अगार है॥ पानी भरैं और२ भाषा इसे देख २ लिपि तो बिचारी सारी देख खाती हार हैं। करते नहीं क्यों नागरी का मान नागरो ए! नागरीप्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥९॥

भारत निवासियो! ऐ नागरी के प्रेमी आप देश भाषा का क्यों नहीं करते प्रचार है। ठौर २ शाला खोल बाल बालिकाओं में हो विद्या का नहीं क्यों शीघ्र करते प्रसार है॥ भिन्न २ भाषा के क्यों ग्रन्थों का न उल्था कर देशमें प्रकाश करैं उन्नत विचार है। आप क्या अभी तक न जानते ये बात हो! कि नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १० ॥

नागरी विचारी अपनीको कर दूर आज भारत निवासी उरदू का करैं प्यार हैं। मानो सती गुणवती पत्नीको निकाल हाय बीबी परदेशी को बनावें कण्ठहार है॥ जानते नहीं हैं वे दुःखदाई होता अन्त वेश्या सङ्ग होता ताकि तन धन छार है। छोड़ो इस वेश्या रूप उर्दू को तुरन्त, भ्राता! नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ ११ ॥

दोषों का सदान क्लिष्ट उर्दू है विलोको भ्रात! जिस में विकार भरे विविध प्रकार है। किस्ती लिखो तो मुहर्रिर पढ़ैं कस्बी और बैल जो लिखो तो तबला पढ़ैं विचार है। द्रोण को दरोन और कर्ण को करन देखो लिखैं उरदूमें ऐसे औगुण

इकार हैं। तो भी उसे प्यार लोग करैं क्या न जानें यह नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १२ ॥

नागरी का रूप गुण देख २ मोहित हो अन्य भाषा भाषी गण इसे करैं प्यार हैं। पिनकाट ग्राउज ग्रियर्सन औ हार्नेली का हिन्दी सेवा हेतु छाया सुयश अपार है ॥ सुकवि रहीम और खानखाना का भी करै एकतान मनमान गान जमसार है। लज्जा है न क्या जो हिन्दू हिन्दी को बिसारे हाय नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १३ ॥

देववानी संस्कृत की दुहिता दुलारी यह नागरी हमारी रस रूप का अमारहै। वर्णावली सुन्दर औ लिपि भी विशुद्ध जिसे सीखते प्रयास बिना शिशु सुकुमार हैं ॥ तो भी बालकों को मौलवी के यहां भेज २ नाहक रटाते क्यों करीमा वे विचार है। हानि इससेहै महा, छोड़ो उरदू को शीघ्र नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १४ ॥

नई रोशनीमें पड़ नव युवागण जोकि निज माता नागरी का करैं तिरस्कार है। वे तो निज घर की सुरस खाँड़ त्याग करैं पर घर के गुड़ को हा खाने का विचारहै ॥ किन्तु अन्त में वे जान जावेंगे जरूर यह करतार सुख का स्वघर का सुधार है। नागरी की उन्नति से उन्नत बनेगा हिन्द नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १५ ॥

जब तक न देशी महाराजे ज़मींदार सब दीनहीन नागरी का करैं सुप्रसार है। निज २ राज्यों के अदालतों में नागरी का करैं अविलम्ब बिन सादर प्रचार है ॥ तन मन धन से जो हिन्दी के सुलेखकों को उत्साहित करैं नित विविध प्रकार

है। तब तक न नागरी के दिवस फिरैंगे फेर नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १६ ॥

उत्तम औ नीति पूर्ण पत्र पत्रिकाएं भ्रात ! करिए प्रकाश जोकि उन्नति अधार हैं। अल्प मूल्य रखिये कि जिस से बिलम्ब बिन भवन २ होवै उनका प्रचारहै ॥ सरल उपयोगी लेख कविता निकालो, जिन्हे सहज में बूझ सकें शिशु सुकुमार हैं। भारत की उन्नतिमें शक न रहेगा फिर नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १७ ॥

अन्य २ भाषा के सुनीति पूर्ण ग्रन्थों के जो अनुबाद का न होवै घर २ प्रचार है। कौशल विज्ञान कला कारी गरी पे जो नहीं पुस्तकें बनाई जावें विविध प्रकार है। तबतक न राष्ट्र की समुन्नति हा ! होवै, कभी एकता न फिर दास वृत्ति पै कटार है। सुकवि सुलेखको ऐ ! पूर्ति इसकी तो करो नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १८ ॥

आपस की फूट को बिसार अब सम्पादको एका करो, सुख का जो प्रबल अधार है। हिन्दी में बनाओ सर्वांग पूर्ण कोष और व्याकरण ताकि होवै भाषा का सुधारहै ॥ हिन्दी के प्रचार हेतु जोरदार लेख लिख पत्रों में प्रकट करो विविध प्रकार है। आप के भरोसे यह नागरी पड़ी है देखो नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ १९ ॥

भारत के बीरो ! मजिस्ट्रेट जज प्यारे आप न्यायी हैं, नहीं क्यों पर करते विचार है। कि निज सती गुणवती पत्नी रहते में हा ! रखना बिदेशी बीबी महा अत्याचार है ॥ दीन हीन नागरी बिचारी को बिसार आप अँगरेजी बीबीको क्यों

करो कण्ठहार है। अंगरेज़ी छोड़ अब नागरी को अपनाओ नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २० ॥

भारत के भावी-वीर शिरोमणि छात्र गणो ! हाथ में तुम्हारे अब हिन्दी का प्रचार है। तुम जो भिड़ो तो होगा कारज सफल सब बोलबाला हिन्दी का हो जगत मँझार है ॥ नगर २ और ग्राम २ में जा तुम शिक्षा दो कि नागरी का लोग करैं प्यार है। राष्ट्र भाषा भारत की नागरी हो जावै शीघ्र नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २१ ॥

भारत के राजे महाराजे ज़मींदार जहाँ पान बीड़ी में हा धन फूँकते अपार है। रण्डी पहलवानों को अकारण ही धन देते मनसे बिसार देश दशा का विचार है ॥ यदि वहां नागरी के हेतु, सरल भर में वे एक बार भी तो खर्चें रुपय पांच चार है। नाम के सुसाथ देश का भी हो सुधार क्योंकि नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २२ ॥

भारत के राजे सेठ धनी ज़मींदारों ही पै नागरी प्रचार का सुगुरुतर भार है। यदि वे उदासी बनै बैठेही रहेंगे हा! तो नागरी बिचारी रहै किस के अधार है ॥ इसका विचार कर नागरी प्रचार हेतु उनको उचित यह, देखिए विचार हैं। कि तन औ धनसे वे सैवें नागरी को क्योंकि नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २३ ॥

सुन्दर सरस और भाव पूर्ण लेख रहें ललित कलित कविताओं की बहारहै। रहतीहै समस्या-पूर्त्ति भिन्न २ कवियों की विविध विषय के सामाजिक समाचार हैं ॥ सुभग और सत्य समालोचना सें भूषित हो नागरीप्रचारक ये उन्नति

अधार है। अविलम्ब इसका प्रचार घर २ में करो नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २४ ॥

अल्प मूल्य इसका है एकही रुपया है भ्रात ! साल भर हेतु, जो न अधिक विचार, है। लेख है सरल जिसे बालक भी बूझ सकें नीति उपदेश भरे विविध प्रकार हैं ॥ नागरी के सच्चे प्रेमियों के उत्साह हेतु, देता यथाशक्ति बहुभांति उपहार है। ऐसे पत्र नागरीप्रचारक को भूलो मत नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है ॥ २५ ॥

पं० श्रीमाली रघुनन्दनसिंह वर्म्मा अध्यापक मलिहाबाद
जिला लखनऊ.

———:०:———

दोहा ।

देशोन्नति पथ पथिक गण, सुनिय पुनीत विचार ।
शुभ नागरी प्रचार है, देशोन्नति को द्वार ॥

घनाक्षरी ।

एहो जगदीश्वर कृपालु दयानिधि नाथ सुनिलीजै द्रुत दास करत पुकार है । जेते बन्धु बांधव निवासी यहि देश वारे उन सबहीन काहिं दीजै सुविचार है ॥ एकता बढ़ावैं बालकन्यका बढ़ावैं उच्च शिखर चढ़ावैं लहि पटुता अपार है । राखैं हिये ध्यान सब काल आर्य धीर बीर नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१॥

दीजिये सुमति हरिलीजिये कुमति अरु खीजिये न जानि जन औगुन अगार है । कलह भगाय करैं पारस्परिक प्रीति कै सहानुभूति दुखियान सों अपार है ॥ स्वाभिमान स्वावलम्ब परम पवित्र धन खोवन न पावै जो पुरातन हमार है । राखैं हिये ध्यान सब काल आर्य धीर बीर नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२॥

विद्या को प्रकाश करि सबके हियन माहिं नाशिये अविद्या तम करिकै उधार है । शुद्ध आचरण सत्य भाषण पुनीत प्रेम इन में प्रवेश होंय सब सुखसार है ॥ वेद और स्मृति शास्त्र पूरण पुराण पुंज भाषण मनन शक्ति देहु दुख ना रहै । राखैं हिये ध्यान सबकाल आर्य धीर बीर नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥३॥

स्वामि प्रेम, जाति प्रेम, देश प्रेम पात्र बनैं परम पुनीत नीत गुन प्रभुता रहै। बानी बेष भूषण स्वदेश अनुकूल होय भूल होय शत्रु भूल माहिं सो फँसा रहै॥ अपनावें अपने न सपने घिनावैं तिन्हैं चपने न पावैं आन सों है मान्यता रहै। राखैं हिये ध्यान सबकाल आर्य धीर वीर नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥४॥

जानैं अंगरेजी ग्रीक लैटिन सुपारसीहू अरबीह फ्रैंच औ जपानी की कथा रहै। होंय बहुभाषी सर्व ज्ञानी पर्यटन करैं पुहमी सकल पै निचल मनसा रहै॥ अनुवाद आछे आछे करैं मातृभाषा माहिं चहुँकोद देश में प्रसार तिनका रहै। राखैं हिये ध्यान सबकाल आर्य धीर वीर नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥५॥

एहो विप्र छिप्र निज मन में विचारो नेक टेक जनि टारो पूज्य पूरब प्रथा रहै। भूसुर कहाते शीश नाते सब जाते तुम्हैं ताते विचलित होनो सर्वथा असार है॥ आगम निगम धर्म नौगुण पुनीत निज परम प्रशंसित सुग्राह्य सुकथा-रहै। हैहै भूमि देव २ भाषै आओ अपनाओ नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ६ ॥

अति पूजनीय ऋषि संतति कहाय हाय! पाय कलिकाल जनि गुण करो क्षार है। निज पुरषान माननीयन्ह भुलावो जानि उपदेश दीबो तजि दीनो पाहि बार है॥ शंकर समान भानि बहुरि जहान मध्य कीजिये महान उपकार भ्रम भार पै। भारत निवासी भोरे भारेन सिखायो किन नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ७॥

प्यारे राजपूत जाति रावरी प्रशंशनीय परम पवित्र देश काहिं सुखदार है। राघौ बासुदेव बुद्ध शुद्ध अवतार लीन्हे ताते सब ग्रन्थन में प्रकटी कथा रहै॥ टाड़ इतिहास पृथीराज रासवादि देखो शिवा औ प्रताप को प्रताप न छपा रहै। अब यहि बार कछु साहस दिखाओ करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ८॥

याद कीजै विक्रम सुभोज के सुहाये समै कौन भांति सुंदर सुपाठित प्रजारहै। निन्दनीय वर्तमान कुदशा बनाई निज आपहू अशिक्षित कहाते भान क्या रहै॥ लेखनी कृपान ले गिरावो शत्रु मूढ़ताहि दीनन को छात्र बृत्ति मिलती सदारहै। मूलमंत्र तुम को बतायो रघुनंद करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥९॥

वैश्य गण देश को उधारन तिहारे शीश बानिज सुमुख्य धर्म आपन ऊँचा रहै। पूजनीय मातु गो न कष्टित रहन पावैं घृत दुग्ध भूरि पूरि देश सब ठाँरहै॥ कृषि शिल्प कर्म दिन दूनो रात चौगुनो हो लक्ष्मी सों पूरित है रीतो गृह ना रहै। छोटे २ छोहरा छबीले पढ़ैं मातृभाषा नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥१०॥

नाहिं महमूद औ मुहम्मद न नादिरादि आक्रमण कारि-न की शंक यहि बार है। काहू भांति दंड पीड़ा पावत न देन कोऊ मुंडकर आदि को न शिर पर भार है॥ परम प्रसन्न धर्म उद्यम चहौ सो ग्रहौ जैसी ज्याहि भावे द्रव्य संचहु अपार है। ऐसो कालपाय भाय चूको कत हाय! करोनागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है॥११॥

चारु ठाम २ पाठशाला खुली जिन माहिं शिक्षक सि-

खावैं पढ़ि लेहु जु विचार है। चाहै पढ़ो नागरी ऽरु चाहै उर-दूहि मीत भीत तजि चित्त गुन बुद्धि को अगार है॥ बाधक न कोऊ काहू भाषा के पढ़न माहिं तापर न मानत न जानौ कौन हार है। ऐसो काल पाय भाय चूको कत हाय! करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १२॥

बालक विचारे अल्प वय वारे कष्ट सहैं आप के न हठ को लखात कछु पार है। दूने दिन लागत सिखन माहिं अन्य भाषा प्रथमहि ताको न अरंभिये असार है॥ सुन्दर सुबोध शीघ्र आवत सबहि जौन ताहिको सिखाओ मानि बैन सुख-कार है। ऐसो काल पाय भाय चूको कत हाय! करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १३॥

ह्वैकै बुद्धि विमल विवेकवारे सारे बन्धु देखत न दिन में दिनेश मोह भार है। त्यागि मंजु मानिक गहत कांच धाय धाय हाय २ तापर प्रमोद अधिकार है॥ मानवरु पशु में कहत यह अन्तर है जानै भल अनभल नर गुणवार है॥ ऐसो काल पाय भाय चूको कत हाय! करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १४॥

देखिये विधर्मिनै पढ़त मातृभाषै सब कैसे ध्यान राखैं नहिं चूक होत पारहै। मिलैं यदि आपसों बखानैं निज भाषा माहिं नाहिं कछु भीत यामें जानत गँवारहै॥ आपनी जु ताहि अपनाइबो उचित धर्म आप जो निकारो मान ताकर कहार-है। ऐसो काल पाय भाय चूको कत हाय! करो नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १५॥

बीए एमे पढ़ि ग्रेजुयेट कहलाते किंतु धर्म-पथ चित्त न

तनिक विचार है । रीति नीति आपनी पुरातन विहाय दीन्हीं नूतन गहत न लजात सुधिकार है ॥ याही भांति ह्वै हैं पुत्र रावरे भविष्यत में चाहौ जो बचायो बैन मानिये सबार हैं । शिशुपन मांहि मातृभाषहि अरंभ करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१६॥

जाहि निज भाषा माहिं भली भांति ज्ञान होत अन्य भाषा सीखत न लागै ताहि बार है । धर्म माहिं सुरुचि विचार हों पुनीत ताके नर रत्न है कै सर्व मान्य सो बनारहै ॥ करै जाति देश की सुउन्नति हमेश याहि किंचित अंदेश नहिं उत्तम विचार हैं । कै सभा समाज सब लोगन सिखाओ किन नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१७॥

जौन जीव जन्तु जगदीश्वर बनायो जग मरि मरि जनम धरत बहुधा रहै । पील औ पिपील निज उदर भरत सब सुख अभिलाषी दुख सपनेहु ना चहै ॥ जीवन सुफल कियो चाहौ तो उधारो देश क्लेश कबहूं न काहू व्यक्ति को हिया दहै । याको एक सरल उपाय बतलाये देत नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१८॥

सर्व सृष्टि प्यारी परमेश्वरै अवश्य तासों जीव हिंसा पातक न यासों निसतार है । मानव हैं सन्तति सबै ही मनु-देवजू की तिनसों सहानुभूति कीजिये सुखार है ॥ पक्षपात परम अपावन स्वभाव गिनि तासों रहि पृथक सुजासों शुरुता रहै । शुद्ध भाव शुद्ध मन बन्धुन सिखाओ भले नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१९॥

नाना भांति भूषण विभूषित न सोहै नर कोटि२ भांति

चाहै कीजिये सिंगार है । स्नान औ विलेपन सुमन माल सो-है नहिं सिगरे नशत शीघ्र लागत न बार है ॥ ऐसी २ वस्तुन पै कीजै अभिमान जानि बुद्धिमान सज्जनन कियो निरधारहै । भूषण है एक मातृ भाषा को विचार करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२०॥

सात जन्म तक बरु कीजिये प्रयत्न पर ह्वैहै इंगलिश को न सब में प्रचार है । याही भांति उरदू अधिक कष्टसाध्य अहै लिखो और पढ़ो और दीसत असार है ॥ मुख्य मुख्य मुखिया पुकारैं समाचार पत्र सबको सुभग सुख दायक वि-चार है । अति सुखसाध्य नेक क्लेश को न लेश अहै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२१॥

बँगला मराठी गुजराती औ कनाड़ी कैथी उड़िया औ गुरुमुखी हू को अधिकार है । एकै देश मध्य बहु भाषा भाषी राजि रहे पारस्परिक समुझन न उचार है ॥ ऐक्यता बढ़ै सो कहो कौन भांति प्यारे बन्धु मिलि बैठैं कैसो होय काविधि विचार है । याही हेत कहत पुकारे हम बार बार नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२२॥

जेती वर्णमाला लिपि प्रचालित भारतमें सबै कढ़ीं संस-कृत ही सों निरधार है । संसकृत शब्द भिन्न २ रूप धारे अहैं सब में विराजमान तिन को प्रचार है ॥ शुद्ध वर्ण शुद्ध शब्द शुद्धही उचारण की राखिये सु एक जाने एकताप्रथार-है । ऐसी अहै कौन जौन नागरी कहाती ताते नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २३ ॥

ऐसो शुभ शासन सु शासकन पाय मन इच्छित मनो

रथ सो पूरो मोह ना रहै। ऐसी न स्वतंत्रता गँवाओ सुख नींद माहिं हैकै कार्य्यपटु शुष्क आलस लतारहै ॥ मानसिक शारीरिक कीजिये सुधार दोऊ जामें न भविष्य माहिं कोई विपदा रहै। पावै सर्व सम्मति मँझार मातृ भाषा मान नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २४ ॥

बड़ो अश्व ताहि एक चाबुक अधिक अरु गर्दभ अनेक लट्ठ सहत प्रहार है। बुद्धिमान हेत एक शब्द ही बहुत अरु अर्धदग्ध विधि सो अरोझई सदारहै। सहृदय सज्जन सुहावने विचार वाले रघुनन्द तिनही सों करत पुकारहै। मंझीवासी कहै बार २ एक बात करो नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २५ ॥

मुन्शी प्रयागनारायण (संगम कवि) बछरावां रायबरेली निवासी और लखनऊ प्रवासी.

———:o:———

दोहा।

गुरु पद पंकज ध्यान बर, तारत ज्यौं संसार ।
देशोन्नति का द्वार है, त्यों नागरी प्रचार ॥

घनाक्षरी।

सब बिधि शिच्छित करत निज पूतनहिं, संततहि राखत सुधरम सम्हार है। सकल बिपच्छिनके हियरा बिमोहिबे को अनुपम हाव भाव पूरित शृँगार है ॥ संगम समागम सों जा के मन मोदलहै, सुबरण सरलहु रहित बिकार है। गुणगण गनत सेराहिं नाहिं याके नेकु नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १ ॥

जासु सरस्वतिताई देव बाणिही की जाई प्रकृत बनाई कुल उन्नति अपार है। आरज सुदेशमें जनमि कै बड़ाई लही विधि ने सृजाई सब भांतिन सँवार है ॥ जननी भई है अब भारत निवासिन की संगम प्रभाव को कछु न वारपार है। याही सों पुकारि ज़ोर डारि यह भाषत हौं नागरी प्रचारदेश उन्नति को द्वार है ॥ २ ॥

गुरु पितु मातु सेवी आनन्द सदाहि लेवी, मानहु कथन यह नीति उदगार है। जननी हमारी अति नागरी[1] बिचारी यह, लखहु सुप्यारे कैसी दीन दुखियार है ॥ जनम लै याकी कोख याही कहँ देहिं दोख, ऐस्यन को छी छी धिक् धिक्

---

१ चतुरा,

लाख बार है। नागरी प्रचार ही उधारि है स्वदेश को सु नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ३ ॥

जोई देश निज जाति भाषा की सु आसा पूरै उन्नति की बाज़ी सोई जीतत खेलारहै। काव्य, कोष, कला ज्ञान कौशल विज्ञान केरे, ग्रन्थ रचि रचि भरैं सौहित अपार है॥ भूषणन भूषित कै, सरस बनावत हैं तिनके सुयश सों जहान उजियार है। यूरुप, जपानकी दशाहू देखि सोचो किन? नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ४ ॥

प्रथम तौ कालिमें सुआयु को भरोसो कौन? आश्रम धरम हू को नेकु ना प्रचार हैं। जीवन स्वतंत्र को तो मुखहू न देखै जीव बालहीपने ते जग जाल में लगा रहै ॥ ताहू पर आरत या भारत की काह कहौं सबही कुचाल की तो इतही कलारहै। उन्नति को शोर करैं हाय! यह सोचत ना नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ५ ॥

शिशुन विदेशी भाषा प्रथम पढ़ावत हैं उनके हियेमें देश प्रीति नेकु ना रहै। डिगरी लहन हेतु प्राण देहिं वे तो नित सोचै कौन उन्नति है कौन! औ कहांरहै॥ झूठे इतिहासन को चशमा चढ़ाए नैन पुरिखा अनारज थे यह मनमाँ रहै। ऐसे जड़ जीवन को कैसे समुझावें हम नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ६ ॥

मूरख लखे हैं हम ऐसे बहुतेरे हाय! उरदू सनेह हिय जिनके अपार है। बोली ये बजारी अस नेकु ना विचारत हैं लिपिहू के दोषन की नाहिं गणना रहै॥ भिन्न २ प्रांतहू के

१ साहित्य,

बासी यह भाषत हैं राष्ट्र हित हेतु राष्ट्रभाषा को प्रचार है। लागे हैं मुहमडन भाइहू सुमानै यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ७ ॥

सोचो निज हीयही में सरल ये बैन प्यारे प्रथम बिदेशी पढ़िलेत जो गँवार है। आयु को अधिक भाग ताहि में बिताय निज आर्थ[1] निपटाय लेइ नौकरी अधार है ॥ धरम करम कुल कान की न आन मान हिय में बिदेशीपन खूबही भरा रहै। आपनेहु दीदा खोवै ऐसे आँधरे सों रोवै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ८ ॥

धरम बनैगो शुभ करम बनैगो प्रीति रीति में सनैगो कौशलादि में लगा रहै। परम सरल होय कारज सबैही करै अहम्मन्यता[2] ते अति दूरिही खरा रहै ॥ मान अपमान की न सान उर आनै नेकु दम्भ सों न बोलै करतव्य मो लगा रहै। जोई नर नारी हिय धारी शुचि मंत्र यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥९॥

हौहीं कछु भाषत न यह इतिहास तत्व आरज समै की देखो कैसी सुदशा रहै। कला कौशलादि की सुउन्नति अपूरव थी आजहूँ लौं भारत विज्ञान को अगार है ॥ सभ्यता प्रचार इतही ते देश २ भयो अबहूँ लौं गावत बिदेशी गुरुभार है। तब सन्सकीरतने[3] ऐसो करि राखो अब नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१०॥

उन्नति को रौर चहुंओर ही सुनाई परै उन्नति समूची एक बात के अधार है। पढ़हिं बिदेशी यदि राज काज हेत

---

१ आमदनी, २ घमंड, ३ संस्कृत,

तऊ सेवित पवित्र निज मातृभाषाही रहै ॥ साहित्य विज्ञान के सुग्रन्थन को अनुवाद करि करि करैं निज भाषा में प्रसार है। यतन करहिं नर मानि सुवचन यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥११॥

बालक हमारो पितु मातु को बिगारो उरदू को दास प्यारो नागरी को जो कुठार है। तिहि को हमारो उपदेश यह बार बार कछु दिन करै हिन्दीही को व्यवहार है ॥ संगम समागम सों याके यदि लाभ होय छारैसी जो फारसीहिं त्यागै कै बिचार है। अथवा हमहिं सिद्ध करि देखरावै नाहिं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१२॥

भाषा अंगरेज़ी अंगरेज़ै रेज़ करि छांड़ै उरदू सो छावै उर दूदँही अपार है। फ़ारसीहू फारै सी बिदारै हिय नित्त नित्त तुरुकी रुकी है पश्तो पश्त करिडार है ॥ बँगला मराठी गुरुमुखी गुजराती आदि भाषा के सुअंगन को सुन्दर श्रृंगार है। तुमहीं बिचारो यह बात है अनैसी कैसे नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१३॥

जगत में आय परलोकहि बनावन है संतनको संनत सुऐसो ही विचार है। धरम करम की सुजेती ज्ञान गाथा एक मात्र संसकृतही सुतिन को भँडार है ॥ संगम न जानै देवबाणिहू तथापि करतव्य पहिचानै यदि भाषा अनुसार है। एरे नर मूढ़! यह गूढ़मत मानु एक नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१४॥

---

१ मिट्टी की भांति, २ टुकड़े टुकड़े ३ धुँवाँ, ४ जोतनेवाले हर के खोदने का लोहा, ५ टूटजाना।

जागे हैं सकल अरु समझन लागे यह एक जाति भाषा बिनु कारज परारहै। ताहीते पञ्चाल, मंदराज, गुरजर[1] बङ्ग महाराष्ट्र बासिन के उपज्यो बिचार है॥ सब बिधि ताय ठहराय निहचय कीन हिंद हित हेतु मात्र हिंदीही तयार है। अबतौ बसाओ यह हिय में सुप्यारे मीत नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥१५॥

सुंदर सुपाठ्य गुण आगरी सुभागभरी मृदुता सरलता को सब रिझवार है। सब देश भाषन को गोदलै दुलारै सदा काहूसों मिलन मों न कछु इनकार है॥ आपने सुभेषहू को किञ्चित गरब नाहिं पावत निरादरहू क्रोध ना प्रचार है। उन्नति को मारग ढुँढय्या भय्या देखो यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥१६॥

शिक्षक समाज जेते भारत के तेते सुनौ तुम्हरोहि ऊपर सुगुरुतर भारहै। ताहि जो सम्हारे नाहिं रैहो जानिलेहु मीत पावहुगे देश की सकल फटकार है॥ संगम तुम्हारे हित हेतु हीसों भाषत है सुनहु सुनहु ये पुकार बार बार है। निज उपदेश को उदेश[2] यह राखो सदा नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥१७॥

जेते व्यवसाई होयँ हिन्दू या इसाई मोहमडन मुसाई सबही सों यों पुकार है। निज बही खातन में रोज़ही की बातन में भली बिधि करैं देशभाषा व्यवहार है॥ याते है भलाई खूब मालहु बिकाई अरु जन समुदाई समुझै गो सब कार है। लाभ अधिकाई अरु होयगी कमाई शुभ नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वारहै॥ १८॥

---

१ गुजरात, २ उद्देश्य.

भारत के बादी औ बिबादी, बकबादी सुनौ त्यागहु बि-देशी भाषा देशिही को कार है । मूरख गँवार ते अदालत के द्वार जाय पावत कलेश भिन्न २ भाषासों अपार है ॥ सम्मन जो आवत पढ़ावत फिरत ताहि समुझत नाहीं कब हाजिरी हमार है । याही सन सङ्गम बिनय उर राखौ नेकु नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १९ ॥

जननी दुखारी यह नागरी हमारी जौलौं होय ना सुखारी तौलौं नाहिं सरै कार है । सब गुणवारी शील वारी प्यारी धाय हाय !!! तेरी ये दशा पै हमही को धिरकार है ॥ संगम जू कासों कहै कैसे समझावै अब शोक की लहरि जाको नाहिं वार पार है । चित्त दृढ़ जाने याहि ठाने रहै संततहि नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २० ॥

एहो जगदीश ! जगकारण करणहार सुनहु गुहार एती अरज हमार है । सुमति सुमेल देहु भारत निवासिन में गारत भयो है नाथ आरत बनार है ॥ पाहि रघुनाथ पाहि पाहि रमानाथ पाहि देश की सु नैय्या अब आप के अधार है । सब ही के हीय यह मारुत बहाओ प्रभु ! नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २१ ॥

जेती काँगरेस औ सभा समाज जेती होयँ उन्नति को मुद्दा एक सबमों बना रहै । ताहू पर उन्नति भई न अजहूँ लौं नेकु अधरम ही को नित्त बाढ़त प्रचार है ॥ संगमजू कारण समुझि कै अचैन होय, मूल बिनशायो वृक्ष सींचेही ते क्या रहै । अजहूँ लौं उन्नति करनहार देखैं नाहिं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २२ ॥

---

१ मुद्दई २ मुद्दाअलेह ३ वकील ।

द्वार बिनशाये कहै कैसे प्रविशैगो कोउ कारज कोऊ पै होय सबही को द्वार है। जाति हित देश-हित विद्या हित चाहत जो ढूँढत रहत सोउ निचही सुद्वार है ॥ चाहत स्वराज्य औ स्वदेश हित साँचो जेउ स्वावलम्ब आदि व्रत तिनहूँ को द्वार है। ताही सन संगम बतावत है हौस धारि नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २३ ॥

उन्नति का द्वार एक नागरी प्रचारही है नागरी प्रचारही सुउन्नति का द्वार है । उन्नति के मारग में नागरीप्रचारक है उन्नति सरित हेतु सुभग पहार है ॥ उन्नति विशेष करि जाव हिगो संगम जो नागरीप्रचारक के संगमा लगा रहै । "नागरी प्रचारक" देखावत स्वदेशिन को नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २४ ॥

सुनहु गोपाललाल विनय हमारी नित नागरीप्रचारक पै आपकी कृपा रहै । एहो गुनसागर सुनागर ! तुम्हारे बिन तुमही बताओ यह नागरी कहाँ रहै ॥ 'संगम' समागम तु-म्हारो नित चाहत पै नागरी औ नागर युगुल की कृपा रहै । जात अब हमहूँ दिखाये सबही को यह नागरीप्रचार देश उ-न्नति को द्वार है ॥ २५ ॥

बाबू श्रीगोविंददास लखनऊ.

घनाक्षरी ।

नाम की बड़ाई इकपाई है रामनाम जाको जस वेदन में गायो मुखचार है । गवरी के नंदन सब दुख दरिद्र भंजन अरु संकट टारन को तुम धार्यौ अवतार है ॥ रीझिय अपनेही गुन दीजिय वरदान अहो, तुमरे सुमिरे सों नाथ ! मंगल हमार है । प्रगटावहु देश प्रेम, हिरदे में निहचै यह, नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १ ॥

चारहु दिश धाश्रौ अरु तन मन धन लाओ हिय प्रेम सरसाश्रौ यह विनती हमार है । रमणिन पढ़ाश्रौ प्रीति उन सों बढ़ाश्रौ निज शिशुन सिखाश्रौ यह सांचौ उपचार है ॥ देव द्विज गनाश्रौ दिन व्यर्थ ना गमाओ कछु चातुरी बढ़ाओ अब औसर सुढार है । शक्तिभर अपनी सब भाइनको सुनाइ देउ नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २ ॥

उन्नति को मूल राज आज्ञा अनुकूल फूल फूलन को बिरवा निज भाषा का तयार है । न करो ढिलाई याहि तरुवर की छाँई बैठि सीखहु सिधाई लगो हमरी गुहार है ॥ तृष्णा तमटारो हित सब को बिचारो ताजि स्वारथ हत्यारो चितकीजिये उदार है । कौन अस अभागो जो यहिके रसपागै नहिं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २ ॥

द्वापर के अंत आप धर्म्म के सहाय हेतु लीलावपु धारि कीन सुजस बिस्तार है । रजनीचर मारे केते दानव संहारे किमि बरनों तुम्हार बल विक्रम अपार है ॥ है रहे अधीर आज भारत के वीर सबै दुख के समुंदर को सूझत न पार है ।

इनकी सुनिलेहु वेगि विद्याबल देहु, इन्हें नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ४ ॥

तिलक को त्रिलोकनाथ तेज बल बढ़ावै अरु गोखले की गिरिजापति लागै गुहार है। सत्य हरिश्चन्द्र अरु सुरेंद्र आदि माननीय निज देश भाषा को कीन उद्धार है॥ मदनमोहन मालवीयजी की उक्ति उत्तम सुन छहरत मन मंदिर में आनंद फुहार है। स्याही ते कोरे कागज पर हम लिखे देत नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ५ ॥

अक्षर अतिही ललाम वर्ण वर्ण केर धाम सर्वोपरि ब्रह्म रूप राजत अकार है। आतम जिमि व्यापक है अद्भुत ब्रह्मांडमांहिं पै वाको रूप रेख नाहिन अकार है॥ इहींभांति सारे स्वर व्यंजन के रूपन को भारत की भाषा में सूक्षम संचार है। ईर्षा अज्ञानता अनर्थ छांड़ि देखौ तौ नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ६ ॥

उत्तम से उत्तम अरु सुन्दर से सुन्दर लिपि भारत के भागिन सों सिरजी करतार है। ऊतन के लेखे त्यों कुमूतन के देखे में बड़ीही कठोर और निपट निस्सार है॥ एकबार प्यारे! पहिचानो स्वर व्यञ्जन को जानोगे उरदू से सौगुनी सुतार है। ऐरे गैरे मन इनकूं रंचहूँ न बूझि परै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ७ ॥

ओक ओक लोकन में थोक थोक पंडित जन पाइगे बड़ाई जिन गाई इकबार है। औषधि अधिक शाल रूपी उन्माद केरी कलियुगी कुतर्कन कों काटन कुठार है॥ अंकित वर अंकन सों संका को फंकाकारि डंका दै पुकारै करौ एक लिपि

प्रचार है। एरेमन मूढ़ गूढ़तत्व को न जान्यों तैंकि नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ८ ॥

करिकै नित नेम प्रेम हियरे में भरत रहौ करत रहौ मन में निजमन्त्र का उचार है। खलौ ना खरेन कों खरावन को त्यागो तुम चलौ ना कुराह गहौ साँचो व्यवहार है ॥ गर्व अरु गुमान छांड़ि गुनियन के चरन गहौ रहौ देशसेवा में नातरु धिक्कार है । घर घर में घूमि घूमि घोषणा कराइदेउ नागरी प्रचार देशउन्नाति को द्वार है ॥ ९ ॥

नगर नगर नागरी के समाचारपत्र छापौ लेखक लिपि-कारन को दीजिय उपहार है। चट पट शिशुबोध, बालबोध, आदि लघु दीरघ पुस्तक लिखि भाषा को कीजै विस्तार है ॥ छल बल तजि छोटन कों छाती सों लगाइलेउ विद्या देउ उन को यह तुमरे सिरभार है। जगमें जस चाहौ तौ जाति में ज-नाइदेउ नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ॥ १० ॥

झगड़े आपस के सब आपही निबेरिलेउ बड़ी कठिनाई छाई राजदरबार है । नटखटी न कीजै नाम नालिश कौ न लीजै बरु पंच पंचाइत पै कीजै इह सार है ॥ टका ऊँटवारी मसल निज आँखिन देखत इनउल्लुन को अजहूँ नहिं लागत अंधियार है। ठगन सों ठगाये पर ठाकुर कहाए नहिं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ११ ॥

डगर बगर नागरी नवेला के गुन गाना हिन्दी पुस्तकों की नित करना भरमार है। इबसों सब बस्तुन को प्रस्तुत कराना गुन सीखना सिखाना बन जाना दस्तकारहै ॥ नगद नारायण के भक्तन सों विनती है उनके बिन हमको जगावै

कौन पार है । तबला अबला की तान तजि निज अलाप्यौ राग नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १२ ॥

थके कारबार थके रोजगार धंधे सब थाक्यौ ब्योपार भयौ झूंठ को पसार है । दग़ाबाज धोखेबाज आलसी उच-का बढ़े छायो देश भर में यों अविद्या अंधकार है ॥ धन्य वही लोग जे स्वदेश हेत कष्ट सहे घर घर में लगायो मातृ भाषाको तारहै । नरकसों बचावै नीति पथमें चलावै यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १३ ॥

पश्चिम के जिते कला कौशल तुम देखत हो सबहिन को मूल देश भाषाको प्रचार है । फटकतहैं क्रूर धूर दूसरे दुआरन की घर के माणि मुक्तन की करत ना सम्हार है ॥ बड़े बड़े इम्तिहान पास किये इंगलिशमें भाई ! नागरीको टर्न आवा शाहवार है । भरत खंड बासी मन धरो ना उदासी इक नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १४ ॥

मदरटंग अपनी को फर्स्ट लैंग्वेज कारो सैकंड में इंगलिश को दीजै अधिकार है । यही एक परम मंत्र देत हमें निसवा-सर प्यारे अंगरेज़ी जिन को चरित उदार है ॥ रहिये ना अजान झट दीजै इत ध्यान याको मर्म पहचान कीजै अब ना अबार है । ललनन फुसलाइ लेउ लरिकन समझाइ देउ नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १५ ॥

वही राह चलना जिस्में गे विद्वान लोग उनहींसे होना देश भर का उद्धार है । शत्रुता न करना मन प्रेम वारि भरना निज भाषा के भाषण में रहना सरसार है ॥ षटरस चाहौ तो खटपट्ट कूं मिटाओ झूंठ झंझट हटाओ यही उत्तम विचार

है। सत्य सत्य भाखौं कछु परदा नहिं राखौं यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १६॥

हठकार हथओं या हरामजादी उर्दू को हमरे घर बाहर बन बैठी सरदार है। छत्री छत्रधारी भए जात हैं भिखारी बिकी जात सरदारी तऊ वाहीसों प्यार है॥ आगवदि चाहौ तो प्राण पण प्रतिज्ञा करो उर्दू उखार करै नागरी प्रचार है। ज्ञानगुन बढ़ाइ दुख दारिद भगाइ देहैं नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १७॥

जबते लखिपाई हम स्वदेशकी छबीली छबि तबते विदेशी बस्त्र लागत तन भार है। दीनन को घालै परवीननको सालै यह विभूति न बहुत काल निपट निस्सार है॥ जीरन भये पै होत कीरन को खायो सो कैसेहू होत नाहिं जीरन उद्धार है। भाषा के बल सों कल कौशल सब आनोगे नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १८॥

चाहै अमरीका जाउ चाहै जाउ लंदन को चाहै जाउ सागर पार जाको न पार है। चाहै कोट पहन चाहै हैटबूट धारलेउ चाहै सिर नंगा रख चाहै दस्तार है॥ जाति पांति त्यागन अरु नात गोत छांड़न या लोक लीक टारन में नाहिं कछु सार है। काज ना सरैगो बिनु वाक चातुरी के यार! नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार॥ २६॥

देश कूं न जानै निज वेश कूं न पहिचानै ठानै मनमानी रीति निपटही गँवार है। फारसी फरेबिन के फंद में फस्यौ है जाइ उरदू के सुपुर्द किये अपनौ घरबार है॥ लातन को देव जैसे मानत नहिं बातन सों ऐसे अभिमानी को सौ सौ

धिकार है। झूंठही बजावै गाल जानै ना अनारी यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २० ॥

कायर कपूत क्रूर कुल के कलंकरूप कहत हैं कराहि आहि हिंदी दुशवार है। कैसे पहचान परै व्यञ्जन को सूक्ष्म रूप कैसे कै जान्यो जाइ स्वर को बिचार है ॥ उरदू पढ़िलैहैं मन अरबी सों लैहैं अरु अंगरेजी भाषा तौ बहुतही सुतार है। शमला सिर बाँधि २ अमला कोई न कहै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २१ ॥

धर्म को पढ़ावै पुनि अधरम बिनसावै उर ज्ञान उपजावै शुचि नीति को अगार है। बुद्धि उपजावै ऋद्धि सिद्धि को बुलावै घर आनँद उमगावै नित नूतन बहार है ॥ भ्रम को मिटावै मोह रजनी घटावै तम तामस उड़ावै ज्यों सूरज उजियार है। गोबिंद गुनगावै हरि भक्ति को दृढ़ावै यह नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २२ ॥

जेते मतिमान ज्ञान गुन के निधान बात उनकी परमान लाख ग्रंथन को सार है। तेते यों भाखैं उन देखी निज आखैं भेद भाव नाहिं राखैं अस निहचौ हमार है ॥ नैन टुक उघारौ दशा देश की निहारौ बिनुभाषा की उन्नति के नाहिं निस्तार है। तुमको समझावैं राहसीधी बतलावैं नित नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २३ ॥

सर्व गुन आगरी और बरनन उजागरी है स्वरन के भेदन को पूरन भंडार है। ह्रस्व लघु दीर्घ मात्रन सों मनमोद भरै छन्दन के छबीले रूप अनुपम की धार है ॥ शाइरी सपत्नी की सांसतकरै के काज आपु न अलंकृत है साजत सिं-

गार है । गुनियन के मनमें यह चपलासी चमकजात नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २४ ॥

जाइ के विदेश भेष अपना नहिं बदलैंगे नित प्रति मन लाग रहा सागर के पार है । सीख के कितीक कला देख के अनेक देश लेखनी उठाइ लेख लिखना सुढार है ॥ लौट के स्वदेश भक्ति करेंगे कराएँगे करने से अनहोनी होत होनहार है । अपना कल्याण हमें आपही दिखाई पड़ै नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २५ ॥

बाबू भगवानवत्ससिंह राजकटारी पोस्ट गौरा जामो जिला सुलतानपुर (अवध)

घनाक्षरी ।

देश देश भाषा अनुवाद यामें किये जाते देश देश बात जानो मानहु विचार है । पढ़हु पढ़ावो सदा पुत्र और पुत्रिन को लिखहु लिखावो धर्म कर्म सदाचार है ॥ बुद्धि को प्रकाश याते ईश पदप्रेम होत विद्या को अगार अरु भाग्य को भंडार है । भाषै भगवान सत्य आपन विचार सार नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ १ ॥

धरम करम सब शास्त्र को सुझावै याही याही देश देशन के कहै समाचार है । याही बुद्धि उपजावै याही काव्य कला कोष कौशल देखावै याही देश को अगार है ॥ याही राज काजकारी कुमति बिदारी याही याही धीर बीरता चेतावै को सुधार है । भाषै भगवान एक सब को विचार सार नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ २ ॥

——*:o:*——

पं० भगवानदीन शर्मा द्वि० उ० (आतमकवि) स्थान गोड़वा

घनाक्षरी ।

धूम करि दीजिये ! दयाकै दान दीनन को द्रव्यदै पढ़ाइये बिठाय चटसार है । कीजिये कृपा की कोर त्यागिकै बिदेशी वस्तु व्यस्त नतु हूनो जात भाग्त अपार है ॥ आतम बखानै भ्रात विनती हमारी सुनि लीजिये सँभारि ये तुम्हारो कार

बार है । काहिली करौ न वेगि जाहिली बिहाय देखो ! नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥१॥

मिन्नति मनाय गीत गाइये ! गुबिन्दजू के हिन्द के निवासी ! सुखराशी सरकार है । किल्लति न कोई राज्य ऐसो है न होई अन्य देखिये बिगोई बुद्धि खोई ! कौन कार है ॥ उन्नति जहान बीच आतम अनोखे तुम ! भाषा मातृवारी सो न कीन्ही क्यों उधार है । किम्मति कहा है करतूति कर तेरे जो न ! नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥२॥

गिन्नति बिताये दिन जीवन के वादि कीन्हे गाढ़िकै बिवाद बहु सो तो बदकार है । हिम्मति न राखी पाढ़ि फारसी युरूपी आदि है गए एलल बीए एफे सरकार है ॥ किम्मति कहा है रही आतम बिराने बस नौकरी निगाही चित चीन्हे अहंकार है । जिन्नति जहान गुन गागरी गही न हाय ! नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥३॥

हिम्मति हेरानी हिन्द बासिन की आज काल्हि कैसो दुखदाई यह छायो अन्धकार है। फिरति अविद्या घूमि धुरवा धरातल पै बरसैं जिहालतको बारि बदकार है ॥ आतम कहत कूर काहिली कलह बायु बौंडर बहत अन्य भाषा की पुकार है। प्रकटे अनेक मूढ़ दादुर न जानैं देव नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥४॥

मिन्नति महान महिमण्डल सराहै जाहि जोई लिखि लेत सोई बांच्यो देत सार है । स्वच्छता सुशीलता स्वरूप शुभकारी कृत्य नित्य नीति रीति को बतावति अपार है ॥ अक्षर जहान बीच ऐसे ये बिलोकियत तिनको सदा ते कवि आतम अधार

है। भरम निवारे धर्म कर्म को सँवारे क्यों न नागरीप्रचार देश उन्नाति को द्वार है ॥५॥

जात ईसु गिरजा गिरीश गिरिजा को त्यागि आतम स्व देशहोत मिष्टर अपार है। आदि अँगरेजी पढ़ि बादि फारसी में फँसि खासी मातृभाषा छोड़ि देतो फटकार है॥ बेहद वि-हाय हिंद! हिंदी गुनवारी हाय! बसत बिलाइनि विलोकि सुखसार है। जानत न जाहिल अचार बिन बेद देव नागरी प्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥६॥

विद्या आदि अतुल अनूप रूप वारी गुण गावत जहान जासु आनँद अपार है। सुन्दरि सुशील युक्त स्वच्छता सराहै को न हिन्दी हिन्दवारेन की सठता सुधारहै॥ भिक्षति महान कवि आनम मनावे मौज मनकी बढ़ावें धर्म्म धनकी पगारहै। तनकी कहै को सब पनकी सुखद देव नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वारहै॥ ७॥

——*:o:*——

श्रीकृष्ण जोशी, बी. ए. प्रयाग।

घनाक्षरी।

नागरी में लेख लेखि नागरी गरीबन को कैसे समझाऊँ हाय दुःख ये अपार है। बोलि नरबानी कैसे बानर बुझायो जाय हाय यह लेख बनभूमिकी पुकार है॥ नागरी प्रशंसा हित नागरी में लेख मानो आपनी प्रशंसा हित आपनो उचार है। तऊ बार बार कहौं नागरीप्रचार चाहि नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ १॥

सगरो संसार देखि लेखन को जानकार एक देवनागरी की लेत बलिहार है। मानुष की भाषा महँ जो कुछ उच्चारन हो लेखहु में देखो ठीक शब्द अनुसार है॥ व्याकरन स्थान औ प्रयत्नहू को ध्यान करै देवनागरी में सब शुद्ध कार बार है। याही हेत नागरी निरादर न होत कहीं नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ २॥

आखर खरे हैं बिखरे हैं नहिं दूर दूर मोती से परे हैं लगा तार मानो हार है। बालकहू एक एक साफ साफ चीन्ह लेत मानो वर्णमाला ज्ञान खासा खेलवार है॥ फारसी की नाईं कठिनाई कुछ नाहीं तऊ जानो यदि नाहीं तो धिक्कार बहुबार है। भारत में जन्म लेके नागरी न सीखो भला? नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ ३॥

सन्तति बढ़ाव हेत जैसी रसभीनी नार खेती उपजाव हेत जैसी जलधार है। प्रीति के बढ़ाव हेत जैसी रीति है उदार बैरके बढ़ाव हेत जैसी हठिगार है॥ रिपुके दुराव हेतु जैसी तेज तलवार शासन जमाव हेतु जैसी सरकार है। तैसी इस देशके सुधार हेतु नागरी है नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ ४॥

भारत के भागवश सूखो सब सार तऊ देशी सरकार इक छायादार डार है। याही के अधार बसो जौलों अँधियार निशि आपनी कनात भोरताननी तयार है॥ धन्यवाद दिये जाव कारवार किये जाव भारत उठाओ यार तब तो बहार है। कोई इस ओर फिरो नागरीप्रचार करो नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है॥ ५॥

एक जात एक बात एकदेश एक बेश भीतरहु बाहरहु एक व्यवहार है। एकसाही रूप रंग एकसाही साथ संग एकसाही भारतका सारा कारबार है ॥ एक साथ ज्योंही मिलैं सारे देशवासी जन नाना भांति भाखैं अरे हायरे धिकार है। एक बानी देशकी बनाओ अब नागरी को नागरीप्रचार देश उन्नति को द्वार है ॥ ६ ॥

सागर घिराने जिस भारत के तीन ओर चौथी ओर दुर्गम हिमाचल पहार है। नागरिक तीस कोटि बीर नर नारी जहाँ काहे तहां आज ये अपार दुःखभार है॥ ध्यान रहै है तो यह एक देश वारोपार तौभी भेदकारी भिन्न बानी व्यवहार है। नागरी उजागरी प्रचार करि भेद टारो नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ॥ ७ ॥

अब तो समस्त जन भारत के एक भये नेकहू न भिन्न २ देश व्यवहार है। सुख माँहि दुःख माँहि हर्ष औ बिषाद माँहि आपस सहानुभूति अमित अपार है॥ एकही प्रकार के विचार अभिचार आदि नाना विधि हाय हाय भाषण प्रकार है। नागरी उजागरी का सब में प्रचार करो नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ॥ ८ ॥

आपस के बैर-महासागर में सारा देश नैय्या सम डोलै नहिं कोई कनहार है। तीस कोटि लोगनको बैठो परिवार निज व्यर्थहू विदेशिन को लादो बहुभार है॥ चेतो अब यार घोर बहती बयार निज देश की विशाल नाव आई मँझधार है। भाषा भेद छेद झट बन्दकरि पार होहु नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है ॥ ९ ॥

प्यार है स्वदेश का तो कीजिये विचार केहि कारन तुम्हार देश आज निराहार है। बाल कटतेही अब रेलमें धकेला जाय खाय परदेशी देश रुदन मचा रहै॥ क्या करै लाचार है किसान जन ज्ञान बिन प्यारो सब दुःखन को योंही परिहार है। नागरीप्रचार करि सब को सुझाओ बात नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ १०॥

खोय बीस साल अँगरेजी पाठशालन में हाय पर बानी में न पायो अधिकार है। अङ्गरेजी भाषन में झूठे इतिहासन में जन्म बीतो रीतो अब धनको भण्डार है॥ शिल्पकला कौशल व्यापार कार छोड़ सीखो हाथजोड़ बोलनो 'गुलाम ताबेदार है'। नागरी की सार से न सीखो सब कार हाय नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ ११॥

आय एकबार मेकडालन बहादुर ने 'धन्यवाद भाजन सो जो जन उदार है। होय छोटे लाट पश्चिमोत्तर प्रदेश माँझ नागरी उजागरी का कीना सतकार है॥ माननीय मालवी महोदय के आसरे से पायो नागरी ने सरकारी अधिकार है। नागरी को काज काहे ढीलो हे वकीलो! सुनो नागरीप्रचार देशउन्नति को द्वार है॥ १२॥ इति॥